वर्ष – 2, अक्टूबर–दिसम्बर 2010

"सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की नीतियों एवं कार्यक्रमों में उपेक्षित बच्चों की भागीदारी" परियोजना के अन्तर्गत प्रकाशित

तितली

DFID Department for International Development

25 years 1983 2008 CUTS International

रंग बिरंगे पंखों से...

Save the Children

संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

त्रैमासिक पत्रिका तितली को आप सभी ने सराहा जिससे हमारा मनोबल बढ़ा है। आज तितली को बच्चे व बूढ़े सभी पसंद कर रहे हैं।

बच्चे बाल अधिकारों के प्रति सचेत होकर बाल सभा में अधिक से अधिक अपनी सहभागिता निभाने लगे हैं। बच्चों के मनोबल को देखते हुये ग्राम पंचायत स्तरीय बाल पंचायत का गठन किया गया है। बाल सभा व बाल पंचायत के बच्चे अब बढ़–चढ़ कर बच्चों से जुड़े मुद्दों की पहचान कर उनका समाधान ढूढ़ने लगे हैं। बच्चों को स्कूल भेजने के लिये प्रेरित करने लगे हैं। बच्चों की यह पहल हमारे लिये सफलता का कदम है।

पप्पू रायका जैसी लडकियां जो पढ़ने की चाह रखती हैं वे आगे बढ़कर अपनी इच्छा जाहिर करने लगी हैं।

आप सभी के पत्र हमें प्रोत्साहित करते हैं। इस अंक के बारे में आपके बहुमूल्य सुझाव सादर आमंत्रित हैं...✍

संपादक मण्डल

फिल्म प्रदर्शन

परियोजना के तहत 28 गांवों में फिल्म प्रदर्शन का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 4500 लोगों ने इसका लाभ लिया।

फिल्म प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य परियोजना के तहत् क्रियान्वित की जा रही गतिविधियों की जानकारी देना, सामाजिक कुरीतियां जैसे बाल विवाह, बालश्रम, बालिका शिक्षा आदि मुद्दों पर गांव के लोगों की समझ बढ़ाना व बाल अधिकारों के प्रति समुदाय को जागरूक करना एवं संवेदनशील करना था। साथ ही परियोजना के तहत् आयोजित होने वाली गतिविधियों में समुदाय की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करना था।

अन्दर के पृष्ठ में

- आंक भणां भई आंक भणां
- बालिका शिक्षा
- शिक्षा की ओर बढ़ाये कदम
- रोशनी से हुआ उजाला

बाल समागम

'कट्स' मानव विकास केन्द्र, द्वारा सेव द चिल्ड्रन के सहयोग से चलाई जा रही ***"सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनो की नीतियों एवं कार्यक्रमों में उपेक्षित बच्चों की भागीदारी"*** परियोजना के तहत् 6 ग्राम पंचायत (शंभूपुरा, सावा, सामरी, घटियावली, नेतावल गढ़ पाछली, ऐराल) के 28 गांवों के बाल पंचायत के पदाधिकारियों के साथ बाल समागम कार्यक्रम का आयोजन केलझर महादेव व समेला महादेव मे किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्राम पंचायत स्तरीय बाल पंचायत के बच्चों में नेतृत्व क्षमता का विकास करना व ग्राम पंचायत की बच्चों के प्रति जवाबदेहिता पर बाल पंचायत की समझ बढ़ाना था।

कार्यक्रम में बच्चों ने गीत, कविता, चुटकुले, भजन और गाने सुनाए तथा सचेतकों ने अपने अनुभव सुनाये। बच्चों ने भी अपने गांव की बाल पंचायत के कार्य व अपने पद व उनकी जिम्मेदारियों के बारे में जानकारी दी। ग्राम पंचायत स्तरीय बालपंचायत के बच्चों को उनके कार्यो की शपथ दिलाई गयी। बच्चों ने पूरी ईमानदारी से अपने पदों के अनुरूप काम करने का संकल्प लिया। इस ग्राम पंचायत स्तरीय बाल पंचायत की बैठक हर तीन माह में आयोजित की जायेगी। इन बच्चों को ग्राम पंचायत के प्रतिनिधियों से समय समय पर मुलाकात करवाई जायेगी जिनके समक्ष बच्चे अपने स्तर पर गांव और बच्चों के हितों से संबंधित समस्याओं को रख सकेंगे और उनका समाधान करवा सकेंगे। बाल समागम में 6 ग्राम पंचायत के 283 बाल पंचायत सदस्यों ने भाग लिया। इनमें 167 लड़के व 116 लड़कियां शामिल थीं।

शिक्षा की ओर बढ़ाये कदम

लगभग 150 घरों की आबादी वाले गांव सावा की ढाणी में रहने वाली 16 वर्षीय पप्पू रायका ने पांचवी कक्षा के बाद अपनी पढ़ाई छोड़ दी थी। बचपन में ही उसके मां बाप ने उसकी शादी करा दी। मई 2010 में कट्स से वह एक सचेतक के रूप में जुड़ी। पप्पू ने सचेतक के रूप में जुड़ने के पश्चात शिक्षा के महत्व को समझा और आगे पढ़ने की इच्छा जाहिर की।

उसके आगे पढ़ने की इच्छा को सराहते हुये संस्था ने उसे पूरा सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया और उसकी उम्र के अनुसार उसे आठवीं कक्षा में प्रवेश दिलाने की कोशिश की। विद्यालय प्रधानाध्यापक ने नियमों और अन्य कारणों से अवगत कराते हुये उसे विद्यालय में दाखिला देने से मना कर दिया। बहुत अनुरोध करने पर यह शर्त रखी कि यदि वह एक माह तक लगातार विद्यालय आयेगी तो इसे दाखिला दे दिया जायेगा।

पप्पू तीन माह तक लगातार विद्यालय जाती रही। अर्द्धवार्षिक परीक्षा से पूर्व जब पप्पू के नामांकन की बात की तो उसका नामांकन करने से मना कर दिया। कट्स कार्यकर्ता ने इस संदर्भ में अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी से सम्पर्क किया और उन्हें सम्पूर्ण परिस्थिति से अवगत कराया। पूरी बात सुनने के पश्चात अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती नर्बदा भाम्बी ने उसे एक्स–स्टूडेन्ट का फॉर्म भरने की सलाह दी। उनकी सलाह मानते हुये पप्पू ने अपने साथ गावं की एक और लड़की का फार्म भरा।

आज पप्पू सचेतक होने के साथ साथ बाल पंचायत की अध्यक्ष व चित्तौड़गढ़ विकलांग मंच की सदस्य भी है। पप्पू विकलांग होते हुये भी विकलांगता का जीवन नहीं जीना चाहती और पढ़ लिखकर अपने को किसी अच्छे ओहदे पर देखना चाहती है। वह अब दूसरी लड़कियों को भी पढ़ने के लिये प्रेरित करती है और सभी लड़कियों को पढ़ लिखकर आगे बढ़ने की सलाह देती है।

बालिका शिक्षा

हमारे समाज में बहुत समय से लड़के और लड़की के बीच भेदभाव होता आया है। सबसे अधिक भेदभाव शिक्षा के संबंध में होता है। लड़के को अधिक पढ़ाया जाता है तथा लड़की को कम या बिल्कुल नही पढ़ाया जाता। आज भी गांवों की स्थिति ये है कि गांवों में शिक्षित बालिकाओं तथा महिलाओं का अनुपात बहुत ही कम है। गांव में अधिकतर ऐसा होता है कि लड़की को पढ़ाई के साथ घर का काम भी करना पड़ता है।

लड़कियों को पराया धन समझ कर उस पर पैसा खर्च करना उचित नही समझा जाता व बेटे को बुढ़ापे का सहारा समझा जाता है और उसकी अच्छी शिक्षा दिलाने का प्रयास किया जाता है।

अगर घर में पढ़ी लिखी बहू आ जाये और वह अपनी शिक्षा व काबिलियत से एक अच्छी नौकरी हासिल करना चाहे तो उसे रोक दिया जाता है और उसकी योग्यता को घूंघट और मान मर्यादा के बंधन में बांध दिया जाता है। यदि बेटे–बेटी को समान अवसर प्रदान किया जायें तो बेटी पराया धन होते हुये भी वो बहू या बेटी बनकर मां बाप के बुढ़ापे का सहारा बन सकती है। अतः बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन दें–

"सजा नही एक सपना होती है बेटी, वेदना नही वरदान होती है बेटी।
खुशियों से महकाती है आंगन को, एक आस्था और अरमान होती है बेटी।
वजूद उसका कभी मिट सकता नही, गैरों के बीच अपनी होती है बेटी।"

सीता जाट, सचेतक फलासिया

आंक भणां भई आंक भणां

आंक भणां भई आंक भणां, पढ़ लिख चोखा मिनख बणां।

खाओ पिओ कूदो खेलो, टाबरिया रो काम ओ पैलो।
पण पढ़वों भी नही झमेलो, पकड़ां आपा स्कूल रो गेलो।
बेली साथी साथ लेंगे, बस्ती ले पोसाळ चलां
आंक भणां भई आंक भणां, पढ़ लिख चोखा मिनख बणां।

रामू रामी दोन्यूं आओ, पाटी बरतो साथै ल्याओ।
सगळा म्हाने पाठ सुणाओ, बारखड़ी गिणती पढ़ ज्याओ।
ए बी सी डी मारी मांडा, पाछै आपां गांवा रमां।
आंक भणां भई आंक भणां, पढ़ लिख चोखा मिनख बणां।

संकलित

IEC निर्माण कार्यशाला

कट्स मानव विकास केन्द्र, रावला सेंती में दो दिवसीय IEC निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 6 ग्राम पंचायत शम्भूपुरा, सामरी, सावा, एराल, घटियावली व नेतावलगढ़ पाछली के बच्चों ने भाग लिया। सभी बच्चों को 5 समूहों में बांटा गया तथा प्रत्येक समूह को विषय प्रदान किये गये। इसमें मुख्य विषय थे बाल विवाह, बाल श्रम, बाल हिंसा, बाल अधिकार व मेरे सपनो का गॉव। केन्द्र समन्वयक ने बच्चों की प्रतिभाओं को सराहा एवं बच्चों में छुपी प्रतिभाओं को निखारने का यह एक अच्छा माध्यम बताया। बच्चों ने चित्रों व रंगों के माध्यम से चार्ट पेपर पर अपने विचारों को आकार दिया।

CHILD LINE 1098 NIGHT & DAY

1098 पर कॉल करें...

यह एक आपातकालीन फोन सेवा है जो सभी बच्चों के अधिकारों और संरक्षण के लिये काम करती है। विशेषतः फुटपाथ पर रहने वाले बच्चे, बाल मजदूर, शारीरिक मानसिक व यौन शोषित बच्चे, विकलांग बच्चे, एच. आई.वी. एड्स पीड़ित बच्चे एवं संकट में फसे परिवारों के बच्चे जिन्हें सुरक्षा व संरक्षण की आवश्यकता है उनके लिये चाईल्ड हेल्पलाईन 1098 पर तुरंत कॉल करें।

- कोई बच्चा अकेला व बीमार हो
- कोई खोया हुआ बच्चा आपको मिले
- किसी कामकाजी बच्चे का शोषण हो रहा हो
- कोई बिछड़ा हुआ बच्चा घर जाना चाहता हो
- किसी बेसहारा बच्चे को भावनात्मक सहारे एवं मार्गदर्शन की जरूरत हो

तो हेल्प लाइन प्रयोग करें।

सामूहिक प्रयासों से ही सुनिश्चित होंगे बाल अधिकार

परियोजना के तहत एक दिवसीय हितधारक आमुखीकरण कार्यशाला आयोजित की गई। 'कट्स' मानव विकास केन्द्र के समन्वयक आशीष त्रिपाठी ने कहा की किसी भी कार्यक्रम की सफलता के लिए समुदाय की भागीदारी आवश्यक है। उन्होने कार्यशाला के संदर्भ में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि सामूहिक प्रयासों के माध्यम से ही बाल अधिकारों को सुनिश्चित किया जा सकता है। परियोजना के संदर्भ में सभी हितधारकों से विस्तृत चर्चा की गई। उक्त कार्यशाला में पंचायत समिति चित्तौड़गढ़ के 28 गाँव के सचेतक एवं ग्रामीण महिला–पुरूष सहित 68 लोग उपस्थित थे।

रोशनी से हुआ उजाला

ज्योति एक छोटे से गांव में अपने मां बाप व भाई प्रकाश के साथ रहती थी। वह अपने मां बाप की लाड़ली थी। वह पांचवी तक ही अपनी पढ़ाई पूरी कर पाई क्योंकि बचपन में एक बीमारी के चलते उसकी आंखों की रोशनी चली गई। उसके मां बाप इतने गरीब थे कि वे एक वक्त की रोटी भी मुश्किल से जुटा नहीं पाते थे। उनके लिए ज्योति का इलाज कराना तो दूर की बात थी।

ज्योति का भाई प्रकाश आठवीं कक्षा में पढ़ता था। उसके मां बाप को प्रकाश से बहुत उम्मीदें थी कि वह बड़ा होकर उनका नाम रोशन करेगा। परन्तु प्रकाश का पढाई में मन नही लगता था और वह स्कूल के बहाने खेलने भाग जाता था। वक्त बीतने लगा और प्रकाश पढ़ाई छोड़कर मौज मस्ती में लग गया। उसकी आदतों को देखते हुए उसके मां बाप ने पंद्रह साल की उम्र में ही उसका विवाह कर दिया। विवाह के कुछ समय पश्चात प्रकाश व उसकी पत्नी कलह करने लगे जिससे ज्योति के मां बाप बीमार रहने लगे और एक दिन वे चल बसे। अब ज्योति अपने भाई व भाभी के भरोसे थी।

उसी गांव की रहने वाली रोशनी ने अपने गांव में ही अपने पति के साथ मिलकर दवाखाना खोला। रोशनी का बचपन उसी गांव में गुजरा था और उसने अपने गांव की दशा देखी थी इसलिये वह चाहती थी कि अपने गांव में रहकर ही वह गांव के लोगों का ईलाज करे। रोशनी को कुछ लोगों से ज्योति के बारे में पता लगा तो उसने उससे मिलने का सोचा।

एक दिन जब रोशनी अपने पति के साथ ज्योति के घर गई तो उसकी दशा देख उसे बड़ा अफसोस हुआ क्योंकि उसकी भाभी ने उसे एक अंधेरी कोठरी में बंद कर रखा था। रोशनी ज्योति को अपने साथ घर ले आई और उसके रहने व खाने का इंतजाम कर उसका इलाज किया। अपने पति की मदद से ज्योति की आंखों का ऑपरेशन कराया जिससे उसको दिखाई देने लगा। उसने रोशनी को धन्यवाद दिया पर रोशनी ने कहा यदि तुम मुझे धन्यवाद ही देना चाहती हो तो तुम्हें अपने पैरों पर खड़ा होना होगा। ज्योति ज्यादा पढ़ी लिखी तो थी नहीं इसलिये रोशनी ने अपने ही अस्पताल में उसे छोटे मोटे काम के लिये रख लिया।

ज्योति की लगन को देखते हुये रोशनी ने उसको को आगे पढ़ने के लिये प्रेरित किया और पढ़ाई में उसकी मदद भी की। कुछ समय बाद उसे नर्स की ट्रेनिंग दिलवाई और अपने ही अस्पताल में सहायिका के रूप में रख लिया। उसके सेवा भाव व कर्मठता को देखते हुये उसे राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया। रोशनी के आने से ज्योति के जीवन में उजाला हो गया जिससे उसका जीवन ही बदल गया व उसने अपने जैसे जरूरतमंदों की मदद करने का प्रण लिया।

वन्दना चौहान, कट्स

जीने दो मुझे

जीने दो मुझे, मैं भी जिन्दा हूँ।
क्या दोष मेरा, मैं हूँ अंश तेरा।
ऐसे समाज पर मैं बहुत शर्मिंदा हूँ।

कहलाती पराई सदा ही रही
जन्म मिला तो मृत्यु सी पीर सही
हैवानों मुझ पर दया करो।
ना कोख में कुचलो हया करो।

अमानवीयता से मैं सदा हार रही
सुन बिलख बिलख कर पुकार रही
तेरे भीतर नन्हीं जान हूँ मैं
मां तू भी मुझे क्यों मार रही।

देवता के वेश में काल खड़ा
समाज को दे रहे मर्ज बड़ा
ना मसल मुझे मैं नन्ही कली
खुद धन्वन्तरी देता श्राप तुझे

सृष्टि का सृजन तो मैने किया
ऐ पुरूष तुझे भी जन्म दिया
फिर क्यों कोख में मुझको मसल रहा
मैं तड़प रही हूँ, सिसक रही
जीवन की भिक्षा मांग रही।

जिस देवी को तुम पूजते हो
मुझमे ही उसका रूप बसा
मैं चीख चीख कर पुकार रही
मानव हो तो सुना ये मेरी "सदा"!!

–साभार संकलित इन्टरनेट

बालमन का अनूठापन

बच्चा केवल एक मिट्टी का लोंदा नही है जिस पर हमारी इच्छा के अनुसार कोई आकार थोपे। उसके अन्दर विद्यमान प्रवृत्ति को उसके कार्यकलापों का सूक्ष्म रूप से निरीक्षण करके उसकी क्षमता को पहचानकर उसका ही विकास वह खुद किस प्रकार कर सके, ऐसे वातावरण का निर्माण करके हम उसे सहयोग दे। हमारी अनावश्यक रोक टोक से अवरोध न करे यही हमारी भूमिका होनी चाहिये।

बालक के लिये तो सारा वातावरण ही एकदम नया होता है। हर चीज उसे अनूठी लगती है और स्वाभाविक संवेदनशील प्रवृत्ति के कारण वह उसकी और खिंचा चला जाता है। बरसों से देखते रहने के कारण हमारी संवेदना ठण्डी हो जाती है इसलिये बालक की जिज्ञासा और हरकते हमें फालतू जान पड़ती हैं और तब उसे सहयोग देने के बजाय हम उसे दबाने का प्रयास करते हैं।

खेल की अपनी संवेदनशील प्रवृति के कारण खेल के दौरान ही उसे कई प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं। खुशी के पलों को वह दोहराता है। अपनी बात को नाचते गाते हुये कहता है। किसी वस्तु को उछालना, फेंकना, दीवार को कुरेदना, आड़ी तिरछी कुरेदी हुई लाईनों से बने निशानों को देखकर खुश होना उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है।

शांति लाल डांगी, कट्स

पहेलियाँ

एक लाल रखता हूँ मैं भी करता
जग में उजियारा।
अंग्रेजी का दस मुझमे, मैं दूर
करूं अंधियारा।

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा सीधा एक समान।
धरती पर में कभी न आता
दूर दूर की सैर कराता।

चुटकुले

राजू – मां मेरी मैडम को कुछ नही आता।
मां – क्यों?
राजू – मां वो सारे सवालों के जवाब बच्चों से ही पूछती हैं।

झलकियां

IEC निर्माण कार्यशाला

समुदाय बैठक

हितधारक कार्यशाला

नई आबादी, शम्भूपुरा के आंगनवाड़ी केन्द्र का उद्घाटन

फिल्म प्रदर्शन

मुख्य हितधारक कार्यशाला

बच्चे पढ़कर बने महान

आओ मिलकर छेड़ें तान,
बच्चे पढ़कर बने महान,
होते हैं बच्चे घर की शान,
इनको दिलाएं पूरा मान।।

समय पर सभी टीके लगवायें,
बिमारियों को दूर भगाएं
सुरक्षित रहेगी इनकी जान,
बच्चे पढ़कर बने महान।।

अच्छी शिक्षा इनको दिलवायें,
घर–घर ज्ञान का दीप जलायें
सबसे बड़ा है विद्या दान,
बच्चे पढ़कर बने महान।।

संतुलित आहार खिलवाएें,
दूध पनीर रस खूब पिलाएं।
इनको बनाये हम बलवान,
बच्चे पढ़कर बने महान।।

बचपन में शादी ना हो जाए,
बाल मजूरी पर रोक लगायें।
इनको बनायें गुणों की खान,
बच्चे पढ़कर बने महान।।

मदनलाल कीर, कट्स

मीडिया क्लिप

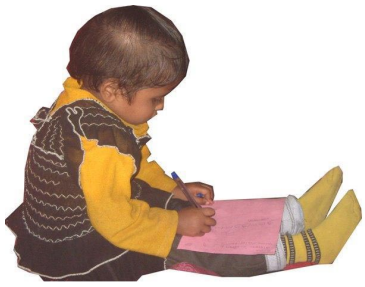

गांव के हर बच्चें को मिले अच्छी शिक्षा

हितधारक कार्यशाला सम्पन्न

एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

आत्म निर्भरता के लिए शिक्षा आवश्यक

पत्रिका संवाददाता @ चित्तौड़गढ़

आत्मनिर्भर–जागरुकता के लिए शिक्षा जरूरी

हितधारक कार्यशाला आयोजित

कार्यशाला में बच्चों ने बनाई संदर्भ सामग्री

कुरीतियां दूर कर बच्चों को मुख्य धारा से जोड़ें

ग्राम पंचायत स्तरीय बाल पंचायत का गठन किया

खोर में बाल समागम

पत्रिका संवाददाता @ चित्तौड़गढ़

उपेक्षित बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ना जरूरी

खोर में बालसभा आयोजित, नवगठित बाल पंचायत को दिलाई शपथ

कट्स मानव विकास केन्द्र
सेंती (रावला), चित्तौड़गढ़, फोन : (01472) 241472, फैक्स : 240072
E-mail: chd@cuts.org, Website: www.cuts-international.org

SAVE THE CHILDREN, INDIA
Rajasthan State Programme Office
42, Vrindavan Vihar, Kings Road, Jaipur - 302 021
Ph: +91 141 403 5881, Fx: +91 141 322 0881 www.savethechildren.in